Preface

आमुख

निरालाजी को आजीवन अभाव एवं उपेक्षा का गरल-पान करना पड़ा। परंतु उनकी मृत्यु के पश्चात् एकाएक चारों ओर उनकी साधना एवं सिद्धि का मूल्य आंकने के प्रयास भी आरंभ हुए, और आज भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में निराला-काव्य, शोध का प्रिय विषय बन गया है। उनके जीवनकाल में हिन्दी भाषी प्रदेश के विश्वविद्यालयों ने उन्हें विशेष कवि के रूप में पाठ्यक्रम में स्थान नहीं दिया था, परंतु इसके विपरीत बड़ौदा विश्वविद्यालय ने प्रथम बार निरालाजी को विशेष कवि के रूप में स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा का विषय बनाया। इसके प्रेरणा-स्रोत निरालाजी के सहचर कुंवर चन्द्रप्रकाशसिंह थे। एक अहिन्दी भाषी क्षेत्र के विश्वविद्यालय का यह कार्य निश्चय ही गौरव का पात्र है। इसी समय अर्थात् १९६० में मैंने बी०ए० आनर्स की उपाधि के लिये निरालाजी को विशेष कवि के रूप में चुना।

बड़ौदा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री कुंवर चन्द्रप्रकाशसिंह ने मुझे बी०ए० के परिणाम के बाद ही यह सूचित कर दिया था कि मुझे अपनी पी०एच०डी० की उपाधि के लिये निरालाजी पर कार्य करना होगा। तदनुसार सन् १९६३ में उन्हीं की प्रेरणा एवं प्रस्ताव के अनुसार प्रस्तुत विषय पर आदरणीय कुंवर साहब के ही निर्देशन में कार्य करने का निश्चय किया गया। अत: इस प्रबंध के प्रेरणा-स्रोत आदरणीय कुंवर साहब (वर्तमान अधिष्ठाता, कला संकाय, जोधपुर विश्वविद्यालय) के प्रति मैं अपनी हार्दिक

कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।परंतु दुर्भाग्यवश उनका निर्देशन अधिक समय तक न मिल सका।तत्पश्चात् डा०चतुर्वेदी मेरे निर्देशक नियुक्त हुए,और उन्हीं के निर्देशन में यह प्रबंध पूरा हुआ है।

आदरणीय चतुर्वेदीजी मेरे न केवल शिक्षक एवं निर्देशक रह चुके हैं,अपितु एक अग्रज एवं मित्र के रूप में भी मुझे उनका स्नेह,सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है।मेरी विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति का श्रेय श्री चतुर्वेदीजी को ही है।प्रस्तुत प्रबंध की गुणवत्ता,चतुर्वेदीजी की प्रतिभा, मौलिकता तथा क्षमता को ही सिद्ध करती है,जब कि त्रुटियां,मेरी अक्षमता का प्रमाण हैं।अतः उनके प्रति अपनी श्रद्धापूर्ण कृतज्ञता को संतोषजनक शब्दों में व्यक्त करना असंभव जान कर मैं अत्यंत विनम्र होकर उन्हें प्रणाम करता हूं। उनकी श्रीमती जी (भाभी जी) की स्नेह-सिक्त कृपा के लिए भी मैं उन्हें प्रणाम करता हूं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पूरा करने में ,तथा मेरे परिश्रम को साकार रूप देने में सुश्रीरेखा पटेल का सहयोग न मिलता,तो कदाचित् यह आमुख लिखने का सौभाग्य प्राप्त न होता। मेरी संवादी और विवादी परिस्थितियों में उन्होंने सदैव जिस तत्परता एवं निष्ठा के साथ मुझे अग्रसर होने में सहायता की है वह चिरस्मरणीय रहेगी। उनके परिवार के सदस्यों ने भी मुझे स्नेहाश्रय दे कर जो उत्साह प्रदान किया है उसके लिए मैं सभी का हृदयपूर्वक आभारी हूं।

अत्यंत विकट परिस्थिति में मित्रवर श्री चौहान साहब ने प्रबंध को टाइप करने में जिस स्नेहपूर्ण तत्परता एवं अविश्रांत श्रम का परिचय दिया है वह शब्दातीत है। मैं श्री चौहान साहब का अनुग्रहीत हूं,और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता रहे।

शोध-यात्रा के अंतर्गत मुझे अनेक सज्जनों एवं विद्वानों का सस्नेह

सहयोग प्राप्त हुआ है। विशेषत: डा० प्रभाकर माचवे जी ने जो अत्यंत उदारता-पूर्ण सहकार दिया, उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूं। महाकवि निराला के आत्मज श्री रामकृष्ण त्रिपाठीजी के अत्यंत स्नेहपूर्ण व्यवहार एवं सहकार के लिए मैं उनका अनुग्रहीत हूं। डा० राम विलास शर्मा, श्री अमृत लाल नागरजी ने जिस आत्मीयता से इस महत् कार्य को सम्पन्न करने में सोत्साह सहकार दिया है उसके लिए मैं उन्हें विनम्रतापूर्वक प्रणाम करता हूं। उपरोक्त सज्जनों के अतिरिक्त श्री सुमित्रानन्दन पंत, सुश्री महादेवी वर्मा, श्री अज्ञेय जी, डा०नामवर सिंह, डा०जगन्नाथ शर्मा, आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, डा० धर्मवीर भारती, डा०राम-रतन भटनागर, डा०शिवगोपाल मिश्र, श्री कमलाशंकर सिंह, डा०हरिवंश राय बच्चन और श्री शमशेरबहादुर सिंह आदि साहित्यकारों एवं विद्वानों के साशीष सहयोग के लिए मैं कृतज्ञ हूं। आधुनिक गुजराती साहित्य के मूर्धन्य मौलिक-सृष्टा डा०सुरेश जोशी जी के साथ की गई साहित्यिक चर्चा एवं विचार-विमर्श के लिए मैं उनका सदैव आभारी हूं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की पूर्णता में म०स०विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा०सी०एस०पटेल, रजिस्ट्रार, तथा अधिष्ठाता, कला-संकाय आदि अधिकारियों का विशेष सहकार प्राप्त हुआ है, एतदर्थ मैं उनका आभारी हूं। विश्वविद्यालय अनुदान-आयोग (यू०जी०सी०) ने प्रस्तुत शोध के लिए जो छात्र-वृत्ति प्रदान की है उसके लिए मैं कृतज्ञ हूं।

अंत में मैं परम पिता परमात्मा को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं, जिसकी कृपा, छाया की तरह सदैव मुझे शक्ति और शांति प्रदान करती रही है। इस पुनीत अवसर पर मैं अपनी दिवंगत मां का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता हूं जिसके चरणों में यह मां के ही उपासक महाकवि निराला पर किया हुआ कार्य सादर समर्पित है। साथ ही मैं अपनी वर्तमान माता तथा पिताजी का सादर चरण-स्पर्श करता हूं जिनकी कृपा और प्रेरणा की परिणति ही प्रस्तुत प्रबंध है।

वसंत जोशी